वार्षिक 150/- रुपये जनवरी 2025 वर्ष 27 अंक 03 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

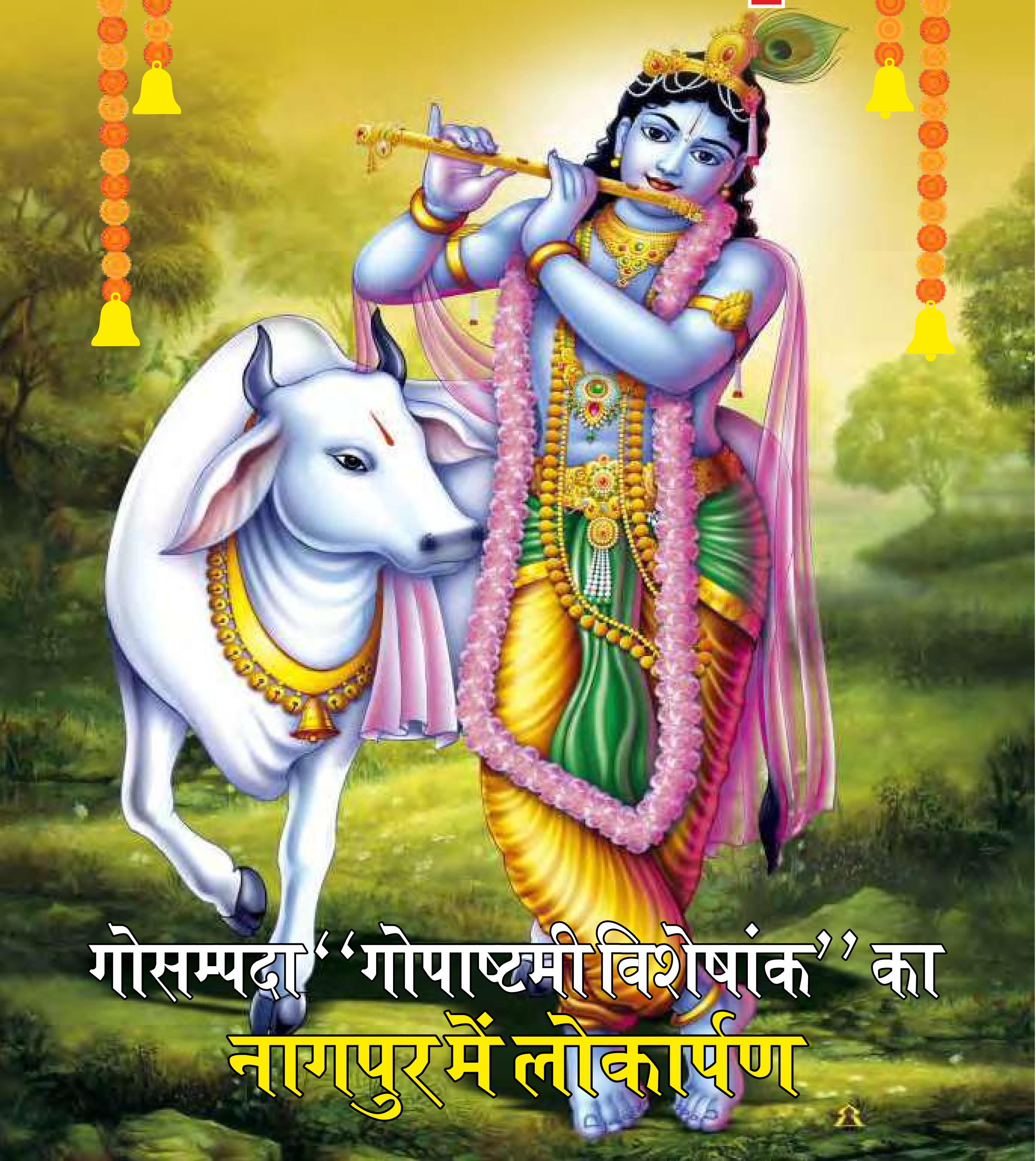

गोसम्पदा ''गोपाष्टमी विशेषांक'' का
नागपुर में लोकार्पण

सम्पादकीय

गोसम्पदा ''गोपाष्टमी विशेषांक'' का नागपुर में लोकार्पण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पवित्र–पावन जन्म स्थली नागपुर में "विश्व हिन्दू परिषद का अखिल भारतीय सोशल मीडिया" का दो दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग गत 28–29 दिसंबर, 2024 को आयोजित किया गया। 28 दिसंबर को प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र के शुभारंभ में **"गोसम्पदा" पत्रिका के "गोपाष्टमी विशेषांक" का लोकार्पण** विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन जी, 'हिन्दू विश्व' पत्रिका के सम्पादक मा. विजय शंकर जी, 'गोसम्पदा' पत्रिका के सम्पादक देवेन्द्र नायक जी, गोरक्षा विभाग के केंद्रीय मंत्री मा. शंकर जी गायकर, गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार के सचिव मा. सनत कुमार जी एवं विहिप के महानगर मंत्री मा. अमोल ठाकरे जी के कर–कमलों द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए डॉ. सुरेन्द्र जैन जी ने बतलाया कि आदिकाल से ही हमारे यहां गोमाता–गोवंश की सेवा–सुरक्षा की पद्धति–परम्परा विद्यमान रही है। चक्रवर्ती राजा दिलीप की कहानी (सत्य घटना) सुनाते हुए उन्होंने कहा कि देश में इस्लाम के आने के साथ ही 'गोहत्या' आरंभ हो गई। डॉ. जैन ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात देश में आज तक की जा रही गोवंश–हत्या के लिए जवाहर लाल नेहरु उत्तरदायी हैं। उन्होंने कहा कि वास्तव में नेहरु जी बीमारी नहीं, एक लक्षण थे। इसलिए उसके कारण यह बीमारी और ज्यादा–अधिक फैली।

अपने संबोधन में विजय शंकर जी ने कहा कि पहले 'बोलने' की पद्धति थी, फिर 'लिखना' प्रारंभ हुआ। तदुपरांत प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया आया और अब 'सोशल मीडिया' का समय चल रहा है, जो काफी प्रभावशाली होता जा रहा है। लेकिन इसके माध्यम से घटनाओं को तोड़–मरोड़ कर 'प्रोपेगंडा' के रूप में फैलाया जा रहा है। अनेक बार पिछली घटनाओं में मिर्च–मसाला जोड़कर उनको वायरल कर दिया जाता है। दुष्परिणामस्वरूप वातावरण काफी दूषित हो जाता है और कभी–कभी तो दंगे होने की आशंका निर्मित होने लगती है। इसलिए ऐसी घटनाओं की 'सत्यता' की जांच किये बिना उनका प्रचार–प्रसार त्वरित रोक कर सभी लोगों को सावधान कर दें। इसी उद्देश्य से आप सभी को प्रशिक्षित करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

गोसम्पदा "गोपाष्टमी विशेषांक" की विषय वस्तु रखते हुए देवेन्द्र नायक जी ने कहा कि भारत–हिन्दुस्थान जैसे आध्यात्मिक–अहिंसक (पूर्व में) राष्ट्र में गोमाता–गोवंश की हत्या एवं गोमांस भक्षण का होना सबसे बड़ा आश्चर्य है। सभी लोग भली–भांति जानते हैं कि 1857 की क्रांति की प्रमुख कारक गोमाता ही थीं। इसके पूर्व से और बाद में गोहत्या रोकने के लिए सतत् संघर्ष–प्रयास किये जाते रहे।

आजादी के पूर्व सभी मूर्धन्य राजनीतिज्ञों ने एक स्वर में कहा था कि **'स्वाधीनता'** मिलते ही सबसे पहले कलम की नौक से पहला कानून गोवंश हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए बनाया जाएगा। दुर्भाग्य से सभी प्रमुख–दिग्गज नेताओं के विरोध के बावजूद जवाहर लाल नेहरु को देश पर थोप दिया गया और जिसके फलस्वरूप गोवंश–हत्या पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सका। इसी प्रकार प्रधानमंत्री इंदिरा जी के शासनकाल में गोहत्या रोकने के लिए 7 नवंबर 1966 को साधु–संतों–गोभक्तों और सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा नई दिल्ली स्थित संसद के समक्ष किये जा रहे शांतिपूर्ण आंदोलन–प्रदर्शन के दौरान उन लोगों पर कथनानुसार इंदिरा जी के आदेश पर सुरक्षा बलों द्वारा गोलियां बरसाई गईं, जिसके दुष्परिणामस्वरूप सैंकड़ों साधु–संतों–गोभक्तों को मौत के घाट उतार दिया गया। कहा तो यह भी जाता है कि घायलों को मृत लोगों के साथ जिंदा जला या दफना दिया गया। बावजूद इस सबके गोवंश–हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए निरंतर संघर्ष–प्रयास जारी हैं (इस संदर्भ में नवं.–दिसं. 2024 के "गोपाष्टमी विशेषांक" के 'सम्पादकीय' में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। कृपया सभी गोभक्त अवश्य पढ़ें)।

आर्ष साहित्य के अनुसार गोहत्या (गोवंश–हत्या) को मानव–हत्या से भी बड़ा–अक्षम्य अपराध माना गया है। स्मरण रहे, पुण्यश्लोक रानी अहिल्या बाई होलकर द्वारा गोवंश–हत्या के संदर्भ में दिया गया न्याय जगविख्यात है। इसी प्रकार की अनेक सत्य घटनाएं हमारे वेदों–पुराणों के माध्यम से सुनाई–बतलाई जाती हैं!

उल्लेखनीय है कि "नेपोलियन बोनापार्ट" केवल और केवल मीडिया (प्रिंट) से डरता था, अन्य किसी से नहीं। इस दृष्टि से गोवंश–हत्या रोकने में "सोशल मीडिया" की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

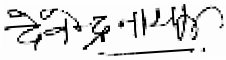

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-03 जनवरी - 2025 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 30/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
'गो' से रक्षित "गोरक्षनाथ"	04
उपेक्षित-तिरस्कृत गोवंश को बचाना नितांत आवश्यक	06
आत्मनिर्भर भारत बनाने में गोवंश का महनीय योगदान	09
दूध का ऋण	11
बद्ध और मुक्त	13
गोवंश-हत्या निषेध से ही आत्मनिर्भर सशक्त भारत का निर्माण संभव	14
समय और संस्कार की सिद्धि है गोधूलि	16
दिल्ली प्रांत गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न	19
पुलिस की मुठभेड़ में तीन गोतस्कर धरे, दो के पैर में लगी गोली	20
गाय की पूजा-अर्चना करने से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है - मिलिंद परांडे	21
Our Mother : Cow	22
Medical Emergency Management in Modern Goshala	25

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त-गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं-

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011-26174732

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

एक महान योगी, संत, धर्मनेता, जिन्होंने अपनी शक्ति और शिक्षा से एक ऐसे समाज को बदला जो झूठ, आडंबर, ऊँच–नीच, व्यभिचारिता आदि विकृतियों से ग्रसित था। उनकी महानता को संपूर्ण भारत पूजता है। भारत की प्रत्येक भाषा में उनकी कहानियाँ मिलती हैं। आज भी देश के हर कौने में उनके अनेक अनुयायी पाए जाते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं – "शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमामण्डित महापुरुष भारत में दूसरा नहीं हुआ।" मात्र वह ही नहीं उनका नाम भी उतना ही प्रभावशाली व वंदनीय है– **"गोरक्षनाथ"**। जहाँ "गो" है, वहाँ दिव्यता है! महानता है! "गोरक्ष"

'गो' से रक्षित "गोरक्षनाथ"

संस्कृत भाषा का एक यौगिक शब्द है, जो "गो" (गाय) और "रक्ष" (रक्षक) शब्दों से मिलकर बना है। अर्थात् गाय की रक्षा करने वाला "गोरक्ष" है।

महाराष्ट्र की प्रचलित लोक कथा के अनुसार **बंगाल प्रांत के चंद्रगिरी ग्राम में सरस्वती नामक एक ब्राह्मणी प्रतिदिन ईश्वर से संतान प्राप्ति की प्रार्थना करती थी।** एक दिन सिद्ध–गुरु मत्स्येंद्रनाथ भ्रमण करते हुए उसी गाँव में पहुँचे। भिक्षा माँगते समय, सरस्वती के दुःखी होने का कारण पूछा। सरस्वती ने निःसंतान होने का जब दुःख प्रकट किया तो उन्होंने सूर्य–मंत्र से अभिमंत्रित विभूति खाने के लिए दी और आशीर्वाद देकर कहा कि मैं जन्मे पुत्र को उपदेश देने लिए 12 वर्ष बाद आऊँगा।

गोरक्षनाथ धाम गोरक्षक के रूप में भी पूजा जाता है। क्षेत्र में होने वाली फसल हो या दुधारू जानवरों का दूध, सबसे पहले यहाँ चढ़ाया जाता है। वहाँ के लोगों का कहना है कि चारों ओर से घिरे जंगलों के बीच इस क्षेत्र की रक्षा गुरु गोरक्षनाथ ही करते हैं। जंगली जानवरों से यहाँ के पालतू जानवरों और मुख्य रूप से दूध देने वाली गोमाता की रक्षा वह स्वयं करते हैं।

सरस्वती ने यह बात जब अपने पास की स्त्रियों को बताई तो उन्होंने योगी–साधु से संबंधित संदेहात्मक बातें करते हुए, सावधान रहने की बात कही और उसे विभूति खाने से मना कर दिया। सरस्वती इन बातों से डर गई और उसने वह विभूति पास के गोबर के ढेर (घूरा) पर डाल दी।

अपने वचनानुसार 12 वर्ष बाद मत्स्येंद्रनाथ पुनः आए और सरस्वती से बालक के बारे में पूछा। उसने पड़ोसी स्त्रियों की बातें बताईं और क्षमा माँगी। मत्स्येंद्रनाथ उस गोबर के ढेर के पास गए और आवाज दी – गोरक्षनाथ! तभी 12 वर्ष का एक सुंदर बालक उसमें से निकला और गुरु मत्स्येंद्रनाथ को प्रणाम किया। वे गोरक्षनाथ को अपने साथ लेकर अपनी यात्रा में आगे चल पड़े। एक पुरानी कहावत है – **"बारह साल में घूरे के भी दिन फिर जाते हैं"**, संभवतः इसी प्रसंग से प्रभावित होकर लोक प्रचलित हुई होगी। महाराष्ट्र में गोरक्षनाथ को **"गोबरनाथ"** भी कहा जाता है। महाराष्ट्र के अत्यंत पूजनीय ग्रंथ **"नवनाथ भक्तिसार"** के दूसरे और नौवें अध्याय में इस सुंदर कथा का वर्णन मिलता है –

हे हरिनारायण प्रतापवंता। मित्रवर्या सूर्यसुता।
जरी अससील या गोवरांत निघ त्वरित या समयी।।
या गोवंरगिरींत नरदेह जन्म। मिरवला असे तूतें उत्तम।
तरी गोरक्ष ऐसे तूतें नाम। सुढाळपणी मज वाटे।।

इस कथा के अनुसार "गोरक्ष" का एक अर्थ और भी निकाला जा सकता है कि गोमाता (गोबर) की रक्षा से जन्मा और पला–बढ़ा, गोरक्ष कहलाया। अतः, गुरु मत्स्येंद्रनाथ ने "गोरक्षनाथ" कहकर उस बालक को पुकारा। इस प्रकार 12 वर्षों तक अपने गोबर से सुरक्षित रखने वाली, पालन–पोषण करने वाली गोमाता की रक्षा के प्रति उस बालक का परम कर्तव्य है, अतः वह "गोरक्षनाथ" कहलाए। **नाथ संप्रदाय के प्रतिपादक गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) जिन्हें भगवान शिव का अवतारी भी माना जाता है।** विद्वानों के मतानुसार उनका जन्म काल भिन्न–भिन्न माना गया है। ग्रंथों व साहित्य में सतयुग से कलयुग तक भिन्न समय में विभिन्न स्थानों पर उनका उल्लेख मिलता है। **गोरक्ष अपने उपदेशों में गाय को ज्ञान स्वरूप बताकर, इसे प्रतीक रूप में प्रयोग करते हैं।**

गगनि मंडल में गाय बियाई, कागद दही जमाया।
छांछि छांणि पिंडता पीवी, सिधां माखण खाया।।

अर्थात् शिखा या सिर के ऊपरी मध्य भाग (गगन मंडल / सहस्रार) में जो ज्ञान उत्पन्न हुआ, उसे काग़ज़ की पोथियों में लिख दिया गया। पंडित बिना तत्व जाने उस ज्ञान को फोकट में पढ़ते रहे, परंतु सिद्धों ने उस ज्ञान के वास्तविक तत्व के आनंद को पाया है। अर्थात् पोथी के ज्ञान और आनंदमय ज्ञान की अनुभूति में बहुत अंतर है। मांस–भक्षण का विरोध करते हुए वह कहते हैं –

जीव सीव संगे बासा। बधि न षाड़बा रुध मासा।
हंस घात न करिबा गोतं। व कथंत गोरष निहारि पोतं।।

(सबदी–227)

जीव और ब्रह्म एक साथ ही निवास करते हैं इसलिए हत्या करके रक्त–मांस का सेवन मत करो। प्राण–घात मत करो। सबको अपने ही गोत्र अथवा कुल का समझो। गोरक्ष कहते हैं, सब प्राणियों को अपने बच्चों (पोत, पूत, पुत्र) के समान देखो, वे सब उन्हीं जैसे हैं।

भारत के दक्षिण से उत्तर तक गोरक्षनाथ के पवित्र स्थल पाए जाते हैं। जहाँ–जहाँ गोमाता हैं, वहाँ उनकी रक्षा में गोरक्षनाथ कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप में सदा विद्यमान रहते हैं। उत्तराखंड में नेपाल सीमा से लगे चंपावत जिले के तल्लादेश क्षेत्र में स्थापित गुरु गोरक्षनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। यह स्थान, चम्पावत–तामली मोटर मार्ग पर जिला मुख्यालय से 40 किमी. दूर एक पर्वत की ऊँची चोटी पर स्थापित है। माना जाता है कि सतयुग में गुरु गोरक्षनाथ ने यहाँ धूनी जलाई थी और तब से यह अखंड धूनी अनवरत प्रज्वलित हो रही है। यह गोरक्षनाथ धाम गोरक्षक के रूप में भी पूजा जाता है। क्षेत्र में होने वाली फसल हो या दुधारू जानवरों का दूध, सबसे पहले यहाँ चढ़ाया जाता है। वहाँ के लोगों का कहना है कि चारों ओर से घिरे जंगलों के बीच इस क्षेत्र की रक्षा गुरु गोरक्षनाथ ही करते हैं। जंगली जानवरों से यहाँ के पालतू जानवरों और मुख्य रूप से दूध देने वाली गोमाता की रक्षा वह स्वयं करते हैं। इसलिए गोरक्षक के रूप में प्रतिदिन उनका दूध से अभिषेक किया जाता है और पूजा–अर्चना होती है।

गोमाता के संरक्षण में पले–बढ़े ऐसे महान गोरक्षक 'गोरक्षनाथ' का प्रभाव सदा बढ़ता रहे। न मात्र गोसेवकों, अपितु प्रत्येक भारतवासियों पर उनकी अनुकंपा एवं उनके उपदेशों का प्रभाव, आशीर्वाद रूप में प्राप्त हो।

"गकारो गुणस्युंक्तो रकारो रूपलक्षणः।
क्षकारेणाक्षयं ब्रह्म श्रीगोरक्ष नमोऽस्तु ते।।

(श्रीगोरक्षनाथ स्तोत्र)

ग–कार गुण से संयुक्त होना है, र–कार रूप का लक्षण है व क्ष–कार अक्षय ब्रह्म है। ऐसे गोमाता के ही सुपुत्र भगवान गोरक्ष को हमारा बारंबार नमस्कार है।।

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

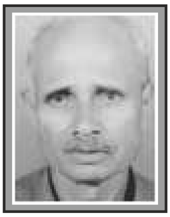

उपेक्षित-तिरस्कृत गोवंश को बचाना नितांत आवश्यक

प्रत्येक देश का लोकजीवन, उसकी भौगोलिक दशा के आधार पर वहाँ की जलवायु, भूमि की उत्पादक–गुणवत्ता और वहाँ के जीव–जन्तुओं की उपलब्धता पर निर्भर होता है। हमारे देश की भौगोलिक दशा संसार के समस्त देशों से उत्तम होने के कारण यहाँ की भूमि उर्वरा ही नहीं अमृत तुल्य अन्नौषधियाँ उत्पन्न करती रही हैं। यहाँ के पशु–पक्षी ही नहीं कृमि– कीट तक अन्नौषधियों की गुणवत्ता को उत्तम बनाये रखने में सहयोगी रहे हैं। आदिकाल से यह क्रम निर्बाध निरन्तर चलता आया है किन्तु पिछले पाँच–छः दशकों से यह क्रम बाधित होना प्रारम्भ हुआ और आज लगभग पूर्णरूपेण बाधित हो चुका है।

हमारे लोकजीवन में धरती, प्रकृति और गो को माता और गोशक्ति वृषभ को पिता के समान आदरणीय–पूजनीय मानकर पूजा जाता है। श्रद्धालु आज भी शिव मन्दिर में स्थापित नन्दी की पूजा शिव के वाहन के रूप में करते हैं। यहाँ तक कि सर्प जैसे विषाक्त जीव की भी पूजा की जाती है। बट, अश्वथ (पीपल) और तुलसी जैसे पेड़ पौधे देवतुल्य मानकर पूजे जाते हैं।

विचारणीय है कि जिस देश में पेड़–पौधे ही नहीं विषाक्त सर्प जैसे जन्तुओं की पूजा की जाती है उसी देश के लोकजीवन में आदिकाल से मातृ–पितृवत पूजनीय गोमाता–गोवंश जिसे हमारे आर्ष ग्रन्थों में सर्वदेवमय कहा गया है, जिसे धरती और प्रकृति का सहयोगी–सहचर और मानव जीवनयापन के आधार रूप में मनुष्य से पहले विधाता ने रचा–सिरजा है; आज वही मंगलकारी गोमाता–गोवंश आज हमारे द्वारा उपेक्षित–तिरस्कृत क्यों होता जा रहा है?

हमारे पौराणिक इतिहास के अनुसार आदिकाल से ही हमारा देश जंबूद्वीपे भरतखण्डे अर्थात् भारतवर्ष के नाम से विख्यात रहा है। आदिकाल में यह हिरण्यगर्भा देश के रूप में भी प्रसिद्ध था। ऐसा इस देश की उर्वरा धरती के कारण था जहाँ सिन्धु–झेलम, गंगा–यमुना, नर्मदा–राप्ती जैसी पावन अमृत तुल्य जलवाहिनी नदियों द्वारा देश के अधिकांश मात्र की आवश्यक जलापूर्ति होने के कारण

विभिन्न प्रकार के अन्न–फल आदि उत्पन्न होने से मनुष्य सहित समस्त जीव–जगत की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति होने के साथ ही संसार के अनेक अभावग्रस्त देशों की सहायता भी की जाती थी। ऐसा होने का एकमात्र कारण हमारे देश की विचारधारा का पूर्णरूपेण धार्मिक होना था, जो हमें गोमाता–गोवंश का पालन पोषण और रक्षा करने का उपदेश देती रहती थी।

धर्म ऐसा शब्द है जिसका समानार्थी शब्द आज तक विश्व के अन्य देशों की कोई भी भाषा नहीं दे सकी है। रिलीजन और मजहब जैसे शब्द धर्म के पर्यायवाची नहीं हैं। यह दोनों शब्द सम्प्रदाय के पर्यायवाची ही हैं। हमारे जिन पुण्यात्मा पूर्वजों ने सृष्टि रचनाकार के रचना हेतु को सृष्टि का गहन अध्ययन–मनन करके जाना–समझा उन्होंने पाया कि जीव–जगत की रचना में दो प्राणी अति महत्वपूर्ण हैं, जो सबसे अन्त में गो और मनुष्य के रूप में रचे गये हैं। इनमें मनुष्य को ईश्वर ने सबसे अन्त में अति महत्वपूर्ण दायित्व की पूर्ति के लिये रचा है। वह महत्वपूर्ण दायित्व प्रकृति के सहचर गोवंश का पालन–पोषण करते हुए उसकी सेवा–पूजा करना और उसकी शक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग करते हुए ही मानव धर्म का पालन करते हुए अपना जीवनयापन करना है। हमारे इन्हीं पुण्यात्मा पूर्वजों ने धरती के सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम प्राणी मनुष्य जो कि ईश्वर की सर्वाधिक प्रिय रचना है, के लिये मानव कर्तव्यों की अवधारणा की, जो धर्म के नाम से जाने गये। सुस्पष्ट है कि धर्म मानवकर्तव्यों की एकीकृत संज्ञा है। अतः संसार के समस्त मनुष्यों का धर्म एक ही है और वह है–समग्र सृष्टि के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अपना जीवनयापन करना।

ईश्वर ने मनुष्य की रचना से पूर्व ही उसके जीवनयापन के लिये गोमाता–गोवंश की रचना इसलिये की है कि वह उसका पालन–पोषण एवं रक्षा करते हुए उसकी शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग अपने जीवनयापन हेतु करे। गोशक्ति अर्थात् वृषभ और सम्पदा दुग्ध, गोमय–मूत्रादि का उपयोग करता हुआ मनुष्य आदिकाल से ही कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों द्वारा अपना जीवनयापन करता आया है। दुखद यह है कि पश्चिमी क्षितिज की मशीनी औद्योगिक चकाचौंध से दुष्प्रभावित होकर हमारे देश के उद्योगपतियों और किसानों ने कम परिश्रम अधिक प्रतिफल के लोभजाल में फँसकर गोवंश को उपेक्षित–तिरस्कृत कर मारा–मारा फिरते हुए घुट–घुटकर मरने के लिये विवश कर दिया है। यह क्रम हमारी आजादी के पश्चात् हमारे अविवेकी–अदूरदर्शी कर्णधारों के सत्तासीन होते ही प्रारम्भ हुआ, जो चक्रवृद्धि दर से भी अधिक गति से बढ़ता हुआ आज की दयनीय दशा तक पहुँच चुका है। आज प्रत्येक संवेदनशील मनुष्य गोवंश के इस भीषण विनाशकारी दुःख से दुखी

है। अब यक्ष प्रश्न यह है कि आज ऐसे संवेदनशील मनुष्य कितने हैं जो गोवंश के लिये संसद और विधान सभाओं को घेरकर सरकार को इनकी शक्ति–सम्पदा के समुचित उपयोग हेतु कानून बनाने के लिए बाध्य करने के लिए प्रभावी आन्दोलन कर सकें।

गोवंश की शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग करने वाला मुख्य जनसमूह कृषकों का है। दूसरे क्रम पर वह समूह आता है जो कृषि आधारित उद्योग–धन्धों के आधार पर जीवनयापन करने वाला है। इनमें तेल–गुड़, उद्योगी और दुग्ध का व्यवसाय करने वाले गोपाल हैं जो बछड़ों का विक्रय किसानों और उद्यमियों को करते रहे हैं। आदिकाल से ही हमारे देश में ऋषियों के गुरुकुल में विद्यार्थियों सहित गुरुओं के लिये दुग्ध की आवश्यकता की पूर्ति हेतु गोपालन होता था, जिनकी सेवा विद्यार्थी करते थे। गुरुकुल से बछड़े कृषकों को दिये जाते थे और कृषक वर्ग यथासम्भव अन्नादि गुरुकुल को देते थे। गुरुकुल के विद्यार्थी ग्रामों में जाकर कृषकों के घर से **''भवति भिक्षाम् में देहि''** कहते हुए अन्न माँगकर लाते थे। इन गुरुकुलों में पथिकों का आवश्यकतानुसार सत्कार भी किया जाता था।

तीव्र आर्थिक विकास की अंधी दौड़ ने मनुष्य को धर्म से ऐसा च्युत किया है कि मनुष्य कर्म–अकर्म में भेद करना भूलता जा रहा है। प्रत्येक कर्म मनुष्य व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा से ही करना चाहता है और करता है। मशीनी दानव ट्रैक्टर ने कृषकों को दिग्भ्रमितकर गोवंश पर ऐसा कुठाराघात किया है कि आज यह उपेक्षित–तिरस्कृत होकर कलपता–सिसकता विलुप्ति की कगार तक पहुँचता जा रहा है। इसका कारण मनुष्य के ज्ञान में अवांछित वृद्धि का होना है, जो प्रकृति के प्रतिकूल है। मशीनी यन्त्रों द्वारा कम परिश्रम अधिक उत्पादन के कारण भोगवादी प्रवृत्तियों ने मनुष्य को धर्म विमुख कर विलासी बना दिया है। आवश्यकता से कहीं अधिक उपभोगी होकर आज मनुष्य परधनापहरण करने लगा है यहाँ तक कि अपनी भावी सन्ततियों के भाग का अपहरण प्रकृति माता को नोच–खसोटकर करते हुए वह नहीं विचारता कि इससे उसकी भावी सन्ततियों की दशा क्या होगी? आज का मनुष्य बुद्धिमान तो बहुत है किन्तु उसकी बुद्धि सद् न होकर असद् हो चुकी है। विडम्बना ही तो है कि गोपालकृष्ण और हलधर बलराम के देश में उनके वंशज हमलोग उनके द्वारा आचरित उपदेशों के महत्व और महत्ता को जानते–समझते हुए भी विपरीत आचरण करने लगे हैं और करते ही जा रहे हैं।

यक्ष प्रश्न यह है कि गोवंश की यह दुर्दशा कैसे या किन उपायों से दूर की जा सकती है? इसका एक ही उत्तर है जो सर्वथा उचित है और वह यह है कि – ''गो शक्ति (बैल) और सम्पदा गोमय–मूत्र और दुग्ध का फिर से समुचित आदर सम्मान के साथ सदुपयोग प्रारम्भ करना।'' यह कार्य सरकार ही करा सकती है क्योंकि गोवंश की उपेक्षा और तिरस्कार का मूलरूपेण उत्तरदायी हमारी पूर्व सरकारें ही रही हैं।

अतः यक्ष प्रश्न यह है कि गोवंश की यह दुर्दशा कैसे या किन उपायों से दूर की जा सकती है? इसका एक ही उत्तर है जो सर्वथा उचित है और वह यह है कि – "गो शक्ति (बैल) और सम्पदा गोमय–मूत्र और दुग्ध का फिर से समुचित आदर सम्मान के साथ सदुपयोग प्रारम्भ करना।" यह कार्य सरकार ही करा सकती है क्योंकि गोवंश की उपेक्षा और तिरस्कार का मूलरूपेण उत्तरदायी हमारी पूर्व सरकारें ही रही हैं। बाजार के दबाव में सरकारें ही अवांछित रूप से कलहलों को प्रोत्साहन देकर शनै–शनै अन्य मशीनी कृषि यन्त्रों तथा रासायनिक खादों–कीटनाशकों को बढ़ावा देने वाली हमारी पूर्व सरकारें ही रही हैं, जिन्होंने परिश्रम के साथ नगण्य धन से की जाने वाली कृषि को मशीनी–रासायनिक कृषि उद्योग के रूप में बदलने का महापाप गोवंश को उपेक्षित–तिरस्कृत करवाकर किया है।

चलभाष – 8765805322

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

आत्मनिर्भर भारत बनाने में गोवंश का महनीय योगदान

भारत अधिकांश गावों में बसता है। कृषि हमारा मुख्य आधार है, और कृषि का मूल आधार है गोवंश। अतः गोवंश का गावों में रहना अत्यावश्यक है। गोवंश द्वारा जन्म से मृत्यु तक बिना मांगे अगर कोई चीज प्राप्त होती है, वह है गोबर एवम् गोमूत्र। गोबर एवम् गोमूत्र का कृषि/प्राकृतिक खेती करने हेतु सदुपयोग होना ही कृषि का मूल आधार है।

भारतीय नस्ल के गोवंश द्वारा प्राप्त गोबर—गोमूत्र में भूमि के लिए अनिवार्य सूक्ष्म जीवाणु एवम् उत्तम खाद प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अतः संपूर्ण भारत में नैसर्गिक पध्दति से कृषि करने हेतु प्रचुर मात्रा में हमारी स्वस्थ नस्ल द्वारा प्राप्त गोबर—गोमूत्र की आवश्यकता है। गोमूत्र में ऐसा भी गुण है कि फसल के लिए हानिकारक कीटकों को गोमूत्र अपनी प्राकृतिक गंध के द्वारा दूर भगाता है।

अतः कृषि से प्राप्त घास, पत्ते, सूखी फसल का उपयोग करते हुए गोबर द्वारा बनाया हुआ केंचुआ खाद एवं गोबर, गोमूत्र, गुड द्वारा बना हुआ अमृतपानी, पंचगव्य के साथ अमृतपानी आदि द्वारा बनाया गया वृध्दीसंवर्धक, गोमूत्र, नीम द्वारा बना कामधेनु कीटनियंत्रक का ही उपयोग करते हुए गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार में गोवंश आधारित कृषि नियमित रूप से की जाती है।

अस्सी एकड़ की भूमि में स्थित देवलापार प्रकल्प में कृषि हेतु सिर्फ गुड़ ही बाहर से लाया जाता है। साथ ही विशेषता यह है कि यहाँ उत्पन्न हुए उत्पादों का परीक्षण करने के उपरान्त पता चला है कि गोवंश आधारित उत्पादित इस अन्न में कैन्सर, डायबटीज आदि बीमारियों को कम करने की क्षमता इस अन्न में है। इस पध्दति द्वारा प्राप्त उत्पाद हमें बीमारियों से दूर रखता ही है। साथ—साथ शरीर का उत्तम पोषण करती है। प्राप्त उत्पाद का वजन भी गुणवत्ता के साथ अधिक प्राप्त होता देवलापार में दिखाई दिया है। अतः हमें अन्न के लिए आत्मनिर्भरता प्रदान करने हेतु गोवंश आधारित कृषि ही भारत को

भारतीय नस्ल के गोवंश द्वारा प्राप्त गोबर-गोमूत्र में भूमि के लिए अनिवार्य सूक्ष्म जीवाणु एवम् उत्तम खाद प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अत: संपूर्ण भारत में नैसर्गिक पध्दति से कृषि करने हेतु प्रचुर मात्रा में हमारी स्वस्थ नस्ल द्वारा प्राप्त गोबर-गोमूत्र की आवश्यकता है। गोमूत्र में ऐसा भी गुण है कि फसल के लिए हानिकारक कीटकों को गोमूत्र अपनी प्राकृतिक गंध के द्वारा दूर भगाता है।

आत्मनिर्भर बनाने में महत् योगदान प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति में हमारी नित्य क्रिया जैसे नहाना, खाना (भोजन) आदि के नियम बताए गए हैं, परंतु इनका ठीक से पालन होना अति आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य अपनी आयु के संपूर्ण काल में दतुअन करना, बालधोना, नहाना, अपने–अपने आराध्य देवता के पास अगरबत्ती, धूप जलाता है। गोवंश द्वारा प्राप्त पंचगव्य का उपयोग विधिवत् करते हुए हमारे लिए निश्चित उसका लाभ स्वास्थ्यवर्धक ही होगा। संपूर्ण भारत में सभी प्रांतों में सुबह उठने के उपरान्त मुखमार्जन करना आम बात है। अलग–अलग स्थानों पर अलग– अलग वस्तुओं का उपयोग इसके लिए किया जाता है। कड़वे नीम की डंठल, नमक, राख, पेस्ट, आदि। भारत के स्वतंत्रता पूर्व काल में अधिकतम घरों में दतुअन के लिए घर में ही कुछ–न–कुछ बनाया जाता था। उसके लिए अलग से पैसा खर्च करके वस्तुओं को खरीदा नहीं जाता था, फिर भी दातों का स्वास्थ्य आज की तुलना में अधिक अच्छा था।

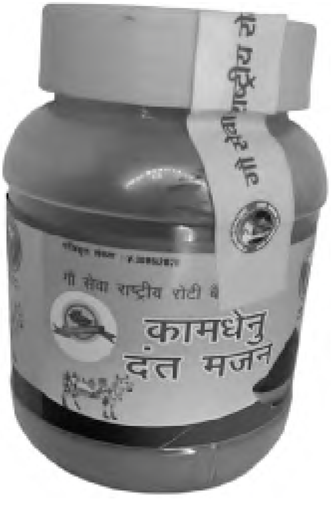

वर्तमान स्थिति में उपलब्ध आधुनिक दतुअन करने की वस्तुओं का अगर हम आर्थिक विचार करें तब एक छोटे परिवार लगभग चार से पांच लागों के नियमित दतुअन करने हेतु 150–200 रुपये का प्रति माह खर्च होता है। साथ ही आधुनिक दंतधावन की वस्तुएं बनाने के लिए भी रसायनों का उपयोग करना पड़ता है। **कामधेनु गोमयभस्म दंतमंजन** भारतीय नस्ल के स्वस्थ गोवंश से प्राप्त गोबर द्वारा बने उपलों से बनाया जाता है। इसके बनाते समय इसमें सैंधव नमक, कपूर, अजवायन सत् निर्धारित मात्रा में मिलाया जाता है। लौंग तैल, नीलगिरी तैल भी मिलाया जा सकता है। इसका औसतन मूल्य एक किलो के लिए लगभग सौ रुपये आता है। एक व्यक्ति को एक दिन में एक ग्राम एकबार दतुअन करने हेतु पर्याप्त होता है। अतः तीन व्यक्ति का एक साल के दतुअन का खर्चा सिर्फ सौ रुपये लगता है। अतः अपने घर में बनी वस्तु सबसे शुध्दतम एवम् अत्यल्प मूल्य में तैयार होती है। हमारा परिवार इस तरह से बाल धोने के लिए गोमूत्र द्वारा बना लोशन, नहाने के लिए गोमय, गेरू, मुल्तानी मिट्टी द्वारा निर्मित टिकिया, उबटन का निर्माण हम सहजता से कर सकते हैं। इन सभी वस्तुओं के निर्माण के लिए हमें कुछ भी भारत के बाहर से खरीदना नहीं पड़ेगा। अतः हमारा धन देश से बाहर नहीं जाएगा। हम किसी पर निर्भर नहीं होंगे। हम इस तरह से गोवंश के आधार पर आत्मनिर्भर भारत बनाने में निश्चित रूप से सहयोगी होंगे।

कहानी

गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'

दूध का ऋण

मैं जब विवाह सम्पन्न होने के बाद पहली बार ससुराल पहुंची तो द्वार पर मेरी सासू मां एक गाय के साथ आरती का थाल लेकर मेरी अगवानी के लिए खड़ी थीं। उनके पीछे आठ–दस महिलाएं खड़ी मंगल गीत गा रही थीं। मेरी आरती उतारने के बाद मेरी सासू मां ने आदेशात्मक स्वर में कहा –**''गऊ माता के पैर छूकर इनका आशीर्वाद लो बहू, फिर देहरी के भीतर पैर रखो।''**

मैंने सिर झुका कर उनके आदेश का पालन किया, मगर उनका यह पहला आदेश ही मुझे चकित कर गया। मेरा जन्म भी सनातन कृषक परिवार में हुआ है और गोसेवा को मेरे परिवार में भी पुण्य का कार्य माना जाता है तथा हमेशा एक–दो गायें हमारे खूंटे पर भी बंधी रहती हैं, मगर गोमाता से आशीर्वाद लेकर ही घर में घुसने की इस रीति से मैं चकित थी। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राचीनकाल से ही ग्रामीण समाज में गाय का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इसीलिए गाय को सनातन धर्म में माता मान कर पूजने की परंपरा भी है। गाय से प्राप्त होने वाले पंचगव्य का महत्व आयुर्वेद में विस्तार से वर्णित है। **एलोपैथी में भी यह तथ्य सर्वमान्य है कि गाय के मूत्र में क्षय रोधी तत्व होते हैं और जहां गाय बांधी जाती है, उसके निकट रहने वाले को क्षय रोग नहीं होता।**

गाय स्वभाव से भी बहुत सीधी और समझदार होती है। मुझे याद है कि मेरी ननिहाल में एक गाय थी। वह मामा के घर के सामने स्थित उनके ही बाग में बंधी थी और उसका दो माह का बछड़ा घर के आंगन में बंधा था। न जाने किस प्रकार पेड़ के तने से बंधी गाय खुल गई। वह रंभाती हुईं घर की ओर भागी। वे जाड़े के दिन थे। मेरी मामी ने अपने बच्चे की मालिश करके उसे आंगन में द्वार के आगे धूप में लिटा दिया था। गाय भागते

हुए अपने बच्चे के लिए घर के अंदर घुसी। उसका पैर बच्चे की छाती पर पड़ने वाला था, मगर बच्चे को देख कर गाय ने अपना अगला पैर बहुत आगे बढ़ा कर रखने का प्रयास किया ताकि जमीन पर लेटे बच्चे को क्षति न पहुंचे। बहुत आगे पैर रखने के कारण गाय अपना संतुलन खो बैठी और लड़खड़ाते हुए आगे जाकर गिर पड़ी। उसका आगे का दायां पैर टूट गया। बहुत उपचार के बाद भी गाय उठ नहीं सकी और दो माह बाद उसकी मृत्यु हो गई। मामा ने दूध खरीद कर शीशी द्वारा बछड़े को पिला कर पाला और बड़े होने तक बहुत लाड़ से उसे रखा, यह अलग बात है। मगर गाय ने बच्चे को बचाने में अपने जीवन की आहुति दे दी, क्या और भी कोई प्राणी ऐसे स्वभाव का होता है? शायद नहीं। खैर! इसके बाद अन्य बहू–आगमन संबंधी रस्में हुईं जिनका मैं सिर झुका कर निर्वाह करती रही।

अगले दिन शाम को मुझे रसोई में ले जाकर सासू मां ने खीर बनाने का आदेश दिया। उनके आदेश के अनुसार मैंने खीर बनाई। शेष भोजन एक अन्य महिला ने बनाया। जब सारा भोजन तैयार हो गया तो सासू मां ने प्यार से कहा –''बहू, एक थाली में भोजन परोस लो और अपनी बनाई खीर भी रख लो।''

जब मैंने भोजन परोस लिया तो वह बोलीं – '' थाली लेकर मेरे साथ गौशाला चलो।'' मैं सिर झुका कर उनके पीछे–पीछे चल दी। वहां कई गोवंश बंधे थे। सासू मां को देखते ही सारे गोवंश खड़े होकर रंभाने लगे। सिर्फ वही गाय जिसके पैर छूकर मैंने गृह प्रवेश किया था, वह बैठी–बैठी हम दोनों को ताकती रही। सासू मां ने आगे बढ़ कर आंचल संभालते हुए गऊ माता के पैर छुए तो मैंने भी उनका अनुसरण किया।

मां जी ने फिर आदेशात्मक स्वर में कहा –'' बहू, गोमाता को पहले एक पूड़ी पर अपनी बनाई हुई खीर रख कर खिलाओ, फिर एक– एक पूड़ी पर सब्जी रख कर खिलाओ। एक–एक पूड़ी अन्य गोवंश को भी खिला देना। बेचारे आशा भरी दृष्टि से अगोर रहे हैं। मैं उनके आदेश का अक्षरशः पालन करने लगी।

जब मैं गोमाता को पूड़ी खिला रही थी तो मां जी आर्द्र स्वर में मुझे कह रही थीं –'' **लो गऊ माता, अब अपनी पौत्र–बधू की सेवा लो तथा मुझसे तुम्हारी सेवा में जो भूल–चूक हुई हो, उसे क्षमा करो।''** फिर आंचल के छोर से अपनी पलकें पोंछते हुए बोलीं –''बहू, मैंने तुम्हारे ससुर की जन्मदायिनी माता को नहीं देखा। तुम्हारे ससुर को जन्म देते समय ही वह परलोक सिधार गई थीं। मेरे ससुर ने अपनी विधवा बहन की सहायता से इन्हें बहुत कठिनाई से पाला। जब मैं ब्याह कर इस घर में आई तो मेरे ससुर ने बताया था कि इन्हें पालने में गऊ माता की बड़ी कृपा रही। बच्चे को जब भी दूध की आवश्यकता हुई, गऊ माता ने उसकी पूर्ति की। दिन में दस–दस बार दूध दुहा गया, मगर गऊ माता ने कभी आपत्ति नहीं की। फिर हंस कर बोले – **एक बार मेरी उपेक्षा करोगी तो मैं सहन कर लूंगा, पर गऊ माता की सेवा में कभी कोई कोताही मत करना। इसे मैं सहन नहीं कर सकूंगा।**

उस दिन से आज का दिन, बहू, बापू परलोक चले गए, विधवा बुआ भी परलोक सिधार गईं, हम दोनों प्राणियों ने इन्हें सदैव परिवार के बुजुर्ग का सम्मान दिया है। आशा है कि तुम भी इनकी सेवा में कोई कमी नहीं रखोगी।

मेरी समझ में अब गऊ माता के इतने अधिक सम्मान का कारण स्पष्ट हो गया था। गऊ माता बहुत वृद्ध थीं। उन्हें दलिया उबाल कर

खिलाया जाता था। मेरे ससुर जी तो सुबह–शाम गऊ माता के पास अवश्य जाते थे और प्यार से उनकी पीठ सहलाते हुए पूछते थे – **बहू , गोमाता को भोजन दिया? पानी पिलाया? और मेरे सकारात्मक उत्तर से संतुष्ट हो कर वहां से हटते थे।**

मेरे विवाह के चार माह के अन्दर ही गऊ माता बीमार हो गईं। मेरे पतिदेव अपने पिता की आज्ञा पाकर उन्हें गौशाला से आंगन में ले आये। डाक्टर को बुलाकर उनका उपचार प्रारंभ किया गया, मगर उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। लगातार दस्त के कारण गऊ माता बहुत कमजोर हो गईं। उन्होंने भोजन भी त्याग दिया। उनके पैर इतने कमजोर हो गए थे कि अब उनका अपने पैरों पर खड़ा हो पाना भी असंभव हो गया और कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अपनी जर्जर काया को त्याग दिया। जिस दिन गऊ माता का देहावसान हुआ, उस दिन हमारे घर में चूल्हा नहीं जला। अगले दिन गांव वालों की सहायता से एक ट्रैक्टर–ट्राली पर उनका शव रख कर गंगा किनारे ले जाया गया और विधिवत उनका दाह–संस्कार किया गया।

जब मेरे ससुर और पति ऋषिकेश में गऊ माता की अस्थियां गंगा जी में प्रवाहित कर वापस लौटे तो उनके चेहरों पर शोक के चिह्न स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, साथ ही यह संतोष भी था कि उन्होंने गऊ माता की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी।'' अगले दिन यह समाचार **कई समाचार पत्रों** में चित्र के साथ प्रकाशित हुआ। सभी समाचार पत्रों में गाय के सरल स्वभाव और उसकी उपयोगिता का बखान किया गया और मेरे परिवार की गौ–भक्ति की भूरि–भूरि प्रशंसा भी की गई। कई समाचार पत्रों ने यह भी माना कि ऐसा गौ– प्रेम केवल सनातन धर्म में ही संभव है। मेरे गांव तथा आस– पास के क्षेत्र में भी यह चर्चा का विषय बना हुआ है। मुझे भी अपने परिवार की सहृदयता पर गर्व की अनुभूति हो रही है।

बद्ध और मुक्त

– आचार्य नारायण दास

संसार में जिन लोगों का जीवन देहाभिमान और वासना से युक्त होता है, वे बद्ध कहे जाते हैं तथा जो इनसे परे होते हैं, वे मुक्त कहे जाते हैं। बंधन और मुक्ति का निर्णय जीवन में ही हो जाता है। इस नश्वर संसार को अपना मान लेना ही बंधन, जबकि इसे भगवान का मानना ही मोक्ष है। संसार का कोई संबंध और वस्तु स्थिर नहीं है। उन सबको एक दिन छोड़ना ही पड़ता है। जैसे किसी यात्रा के समय जिस सीट पर हम बैठते हैं उसे छोड़ना ही पड़ता है, वैसे ही सांसारिक यात्रा पूर्ण होने पर करना पड़ता है। यात्रा का टिकट आयु है। जिस अभीष्ट स्थान पर जाना है वह मृत्यु है। जीवन में तेरी–मेरी और तेरा–मेरा का द्वंद्व उसी दिन विराम ले लेता है, जिस दिन पंचभौतिक शरीर प्राणशून्य हो जाता है। अतः समय और स्वस्थ रहते हुए ही अपने आत्मकल्याण का साधन कर लेना चाहिए, क्योंकि आग लगने पर कुआं खोदने से क्या लाभ?

आज सत्संग से विमुख हो रहा मनुष्य भटकाव का शिकार हो गया है। वह धन, बल और वैभव आदि को ही सत्य मान बैठा है। स्मरण रहे कि मरणधर्मा संसार में अनेक जीव आते–जाते हैं, किंतु लोक में उसी का आना–जाना उत्तम है, जिसने अपने जीवनकाल में मानवता के लिए कोई ऐसा महनीय कार्य किया हो, जिसका जनमानस सम्मान करते हुए उसे अपने आचरण में उतारकर वैसा ही करने का प्रयास करे। वस्तुतः, जिसके सत्कार्यों का गुणगान जनमानस करे, वह सदा मुक्त है।

जीवन की प्रत्येक अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थिति ही सांसारिक बंधन हैं तथा अनुकूलता एवं प्रतिकूलता में सम रहना ही विमुक्त पुरुषों के सुलक्षण हैं। जिसे भी नश्वर संसार के बंधनों से मुक्ति की अभिलाषा हो वह केवल दो कार्य करे। प्रथम – स्वयं को उपलब्ध धन, जन और ऐश्वर्य आदि में अपनत्व का भाव तथा जो नहीं प्राप्त है उन कामनाओं का परित्याग। यह याद रखना चाहिए कि व्यक्ति कर्मों से बंधन में नहीं होता, अपितु कर्मों में आसक्ति के कारण बंधन में जकड़ जाता है।

धर्मनारायण शर्मा (वरिष्ठ प्रचारक, विहिप)

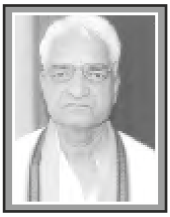

गोवंश–हत्या निषेध से ही आत्मनिर्भर सशक्त भारत का निर्माण संभव

भारत प्राचीन काल से अधिकतम शाकाहारी भारत रहा है। इस देश के ग्रंथों में सत्य का ही प्रतिपादन हुआ है। कालक्रम से कुछ चारवाकी पैदा हुए उन्होंने श्रेष्ठ ग्रन्थों में मनमानी घुसपैठ की और मनमाने श्लोक रचितकर उनके मनमाने अर्थों को ग्रंथों में डालकर विकृत करने का कार्य किया है। मुस्लिम काल में अल्लोपनिषद बनाकर हिन्दुसमाज को भ्रमित करने का कार्य किया। इसी प्रकार यूरोपी गुलामी के काल में योजनापूर्वक वेदों, उपनिषदों की व्याख्या करके अनेक हिन्दू श्रीमानों को भी वैचारिक गुलाम बनाने का कार्य किया है। हमारे देश के भी कुछ तथाकथित विद्वान, इतिहासकारों ने भी इतिहास की सच्चाई का गला दवाकर मृत या मरणधर्मा इतिहास बनाया। एक समय आया कि वामपंथी अंग्रेजों द्वारा लिखा इतिहास या भारतीय शास्त्रों की रिसर्च के नाम से व्याख्या करने लगा। कोई कहता है वेदों में, यज्ञों में, शास्त्रों आदि में गोमेध, अश्वमेध आदि का मतलब उनकी हत्या करना है। इतना भ्रम निर्माण किया कि हिन्दू हिन्दुत्व व शास्त्रों से ही घृणा करने लगा। शुद्ध, सत्य सटीक शास्त्र प्राप्त होना कठिन हो गया था। जब कभी जो राष्ट्र पराधीन हुआ है वह राष्ट्र पराभूत वृत्ति धारणकर झूठी पत्तल चाटने में गर्व महसूस करता है। भारत की यही अवस्था लम्बेकाल तक चली और अब भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। इस विचित्र और विकृत कृति को देखकर **पूज्यपाद श्री मध्वाचार्य आनन्दतीर्थ जी ने 'महाभारत तात्पर्यनिर्णय'** में लिखा है–

''क्वचिद् ग्रन्थान् प्रक्षिपन्ति, क्वचिदन्तरितानापि।
कुर्युः क्वचिच्च व्यत्यासं, प्रमादा त्क्वचिदन्यथा।।
अनुत्सन्ना अपि ग्रन्थाः, व्याकुला इति सर्वशः।।

अर्थात्– सभ्यता संस्कृति के विघातक धूर्त लोग कहीं–कहीं प्रक्षेप ग्रथों में मिलावट करते हैं, कहीं बदलकर पाठान्तर कर देते हैं और धूर्ततावश ग्रंथ को अन्यथा कर देते हैं। इस प्रकार ग्रन्थों के अर्थ को अनर्थ में परिणित कर समाज को विभाजित कर विधर्मी बनाने का काल लम्बे समय तक चला है। उपर्युक्त लेखन शास्त्रों एवं गोमाता से सम्बन्धित होने से लिखा है। गाय और वेद–ऋगवेद में गोवध निषेध–

''माता रुद्राणां दुहिता वसूनां, स्वसादित्यानामृतस्य नाभिः।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय, मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।

ऋग्वेद–8–10–1–15

अर्थ–गाय रुद्रब्रह्मचारी की माता है, निर्माता है। दुष्टों को रुलाने वाले (रोदयति तस्मात रुद्रः) विद्वान्, सैनिक सेनापति आदि गाय को माता के समान पूज्य पालनीय समझते हैं। गाय वसु विद्वानों की पुत्री है (वासयन्ति तस्माद्वसवः)। गाय अमृत की नाभि, अमृत का केन्द्र है। गाय निर्दोष निष्पाप है।

यजुर्वेद में गोवधनिषेध–

इमं सहस शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिश्स्यमध्ये।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्रे मा हिंसीः परमे व्योमन्।।

यजु. 13–49

यह मंत्र राजा के लिये उपदेशात्मक है। अर्थ–हे परोपकारी राजन्! गाय मनुष्यों के लिए असंख्य सुखों का साधन है, यह दुग्ध के लिए बहु विधि से पालनीय है। यह घृत–दुग्ध देने वाली अदिति अखण्डनीय है। हे मानव! इसकी हिंसा मत करो। अर्थात् कोई भी गाय की हिंसा न करे, ऐसे राज्य में राजा की व्यवस्था हो।

अथर्ववेद में गोवध निषेध –

'' अन्यान्यमभिहर्यत्, वत्संजातमिवाध्न्या''

अथर्व.–3–30–1

यह सामाजिक कर्तव्य का उपदेश है–हे मनुष्यो! परस्पर एक दूसरे को इस प्रकार स्नेह दो, प्यार करो, जैसे अहन्तव्य गाय अपने बछड़ों को प्यार करती है। अर्थर्ववेद का निम्न मंत्र–गोरक्षा तथा गोहत्यारों के लिए दण्ड का विधान करता है–

''यदि नो गां हंसि, यद्य यदि पूरुषम्।
तनन्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा।।

अथर्व.–1–16–4

अर्थात्– यदि तुम हमारी गायों की हत्या करोगे, यदि हमारे घोड़ों और पुरुषों की हत्या करोगे, तो हम तुम्हें सीसे की गोली से उड़ा देंगे। जिससे कि तुम हमें हानि पहुँचाने के लिए बच न सको। महाभारत में भी लगभग इसी भाव को इस प्रकार कहा गया है–

अध्न्या इति गावां नाम, क एताहन्तुमर्हति।
महच्चककुशलं, वृषं–गां वा लभेत यः।।

शांति – 262–47

अर्थात्–गायों का नाम अध्न्या है, वे अवध्या हैं। इसलिए गोघातक को प्राणदण्ड देकर उसका अन्तकर देना चाहिये। स्मृतियों में प्रायश्चित का वर्णन करते हुए मनुमहाराज कहते हैं–

जपित्वा त्रीणी सावित्री सहस्त्राणि समाहितः।
मास गोष्ठे पीत्वा मुच्यतेऽसत्प्रतिग्रहात् ।।

194, अ.11 मनुस्मृति।।

जब ब्राह्मण निन्**दित** मनुष्य से अथवा निन्दित वस्तु का दान लेता है तो पाप से मुक्ति हेतु उसे एकाग्रचित होकर सावित्री (अर्थात् गायत्री) का तीन हजार बार जप करके एक मास गोशाला में निवास करके दूध पीकर रहे तभी उसे पाप से मुक्ति संभव है। पाप मुक्ति के लिये गोशाला अर्थात् गोसेवा तथा केवल गोदुग्ध पान द्वारा ही पापसे छुटकारा मिलना संभव है। मनु ने गोघात करने वाले को कितना कठोर प्रायश्चित बताया है–गाय को मारने वाला उपपातयुक्त मनुष्य मुण्डन करवा के उस गौ के चमडे से शरीर को ढकता हुआ गोशाला में निवास करे और एक महीने तक जौ का (पतली लपसी के रूप में) पान करे तभी वह गो घातक पाप से मुक्त हो सकता है। इस प्रकार शास्त्रों में गोपालन–गोरक्षा का उपदेश भरा पड़ा है। गोहत्यारों को कठोर दण्ड का विधान किया है। इस कारण हजारों वर्षों तक गो पूजनीय, रक्षणीय रही है। राजा लोग हजारों गायों का दान करके अपने को धन्य समझते थे। ऋषियों के आश्रमों में गोपालन होने से भारी मात्रा में दूध होता था। विद्यार्थी दुग्धपान करके शक्तिवान, बुद्धिमान तथा विद्वान बनते थे। ऐसे पुष्टशरीरधारी महात्माओं ने लम्बी साधना कर सत्य का साक्षात्कार किया था। वे कठोर परिश्रम करने में समर्थ थे। एक ही आसन पर घंटों साधना किया करते थे। शरीर, मन, बुद्धि से सक्षम होने से उन्होंने भारत को ज्ञान–विज्ञान के कोष से भर दिया था।

आज गोहत्या आम बात हो गई है। राक्षसी मनोवृत्ति के करोड़ों साम्प्रदायिक मानव गोमांस भक्षण करके पापचारी बन रहे हैं। ऐसे पापियों का संहार आवश्यक है। यदि हम सच्चे अर्थ में भारत को सर्वश्रेष्ठ, अग्रगण्य बनाना चाहते हैं तो गोवंश निषेध का कठोर कानून बनाना होगा। मनुष्य वध, गोवध समान है। गो अर्थात् गोमाता। यह विश्व की माता है पापी–राक्षस माँ को मारकर पतनधर्मा बने हुए हैं। ऐसे पतित ही भारत का विनाश करेंगे। समय रहते गोमाता की रक्षा का कानून बनावें जिससे पापियों को दण्डित करना संभव हो सके।

गोपालन को प्रोत्साहित करना सत्ता व जनता का धर्म है। कृषकों के घरों में दो–चार गायों की अनिवार्यता निर्मित हो। अच्छी दुधारी गायों के निर्माण की प्रक्रिया तेजी से चलाई जाय। स्वदेशी के प्रचार वेला में स्वदेशी गोमाता की वृद्धि हो और स्वदेशी घी–दूध (मिलावटी नहीं) का प्रचार व प्रयोग बढ़ेगा तो भारत में पुनश्च दूध–दही की नदियाँ बहेंगीं और भारत कृषि–अन्न में आत्मनिर्भर ही नहीं निर्यात करने वाला बनकर मानवता की सेवा करते हुए आत्मनिर्भर, सशक्त, सक्षम भारत विश्व में आविर्भूत हो सकेगा।

श्री कृष्ण ''जुगनू''

गोधूलि समय और संस्कार की सिद्धि है

कई बार तो लगता है कि मानवीय समझ और उसको साझा करने के लिए गाय से जुड़ी गतिविधियां बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं।

गायों की पदचाप से उठने वाली धूल

आश्विन के बाद कार्तिक की संध्या में गांव की गलियां गोधूलि उठातीं और गोधूलि से ही नहातीं तो दादी, नानी, पोते–पोतियों, नातियों को बाहर लेकर बैठ जातीं ताकि व्याधि की आशंका भी हो तो गोधूलि उसका शमन कर दे! **गोधूलि बेला!** बहुत आदरणीय शब्द है जिसको समय के साथ जोड़ा गया है! इसको लग्न का सम्मान दिया गया है। लग्न साधन की झंझट से अलग, तिथि, मुहूर्त, वार, होरा, करण आदि देखने की बजाय शुद्ध बेला का पर्याय हुआ गोधूलि बेला। लोक में **''गोधलकिया लगन'** का बड़ा मान रहा, क्योंकि इसी बेला में सबको अपने ठिकानों का स्मरण आता है। क्या परिंदे और क्या चौपाए! यह बेला संयोग की हेतु है। विवाह जैसे सर्वोच्च संस्कार में गोधूलि बेला को सर्वोच्च प्राथमिकता है। जानते हैं क्यों!

गोधूलि के मुहूर्त में सप्तपदी को भी शुभ माना गया है। वराहमिहिर का विवाह पटल हो या केशव का विवाह वृंदावन ग्रंथ, इस मुहूर्त की बड़ी प्रशंसा करते हैं। सबको यह समय लुभाता है। कभी जब गाँव से लौटते देर हुई, तब आलय को लौटती धेनुओं की ग्रीवा में लटकी घंटियों, किंकणियों का स्वर और खुर से टकरा उठती धूल, हमें अनेक प्रेरणाओं से भर देती है। ऐसी बेला अद्भुत दृश्य संयोजित

करती है। बुजुर्ग कहते हैं कि गोधूलि बेला में प्रभु का स्मरण करें। न तो भोजन बनाएं और न ही सेवन करें। सोना और अध्ययन करना भी सही नहीं माना जाता। इसी को सुषुमना भी कहते हैं। यह भी कहते हैं कि इसमें घर का ध्यान हो। घर स्वयं का और घर साहिब का! मां तो घर लौटी गाय को छूकर उसकी धूलि सिर पर लगाती! यह श्रद्धा के साथ उपचार भी था।

गोपाष्टमी के दिन मां आटे में गुड़ मिलाकर उसे पहले कम पानी से गूंथतीं, फिर आठ पिंड बनातीं। उन पर रोली से टीके लगाकर गोधूलि बेला में गायों को खिलातीं। बोला जाता है–

पंखी माले आविया, खूंटे गावडियाह।
सहियर इसड़ो साहिबो खोज न बावडियाह।।

आज मशीनीकरण और भौतिकता का दुराग्रह इन सबको लील गया है। गोधूलि के विषय में सोचकर ही बचपन की यथार्थ गोधूलि बेला याद आ जाती है। सचमुच वह आनंद बच्चों के लिए बड़ा आकर्षक था। जब गायों का समूह जंगल से घर को लौटता था तो आस–पास का सारा परिवेश धूलिस्नात् हो जाता था। स्वयं गायों का दिखना भी कम हो जाता था। आगे–आगे गायें और पीछे–पीछे ग्वाला! क्या मनोहारी दृश्य हुआ करता था। आज इन सबको याद करते ही आंखें भर आती हैं। ऐसे बदलाव की तो हमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। फिर भी हम सौभाग्यशाली हैं कि ईश्वर ने हमें कितना कुछ दिखाया है।

गोधूलि की तरह **गोजाग** शब्द सुबह के अर्थ में आता है। गोधन हमारी अर्थ व्यवस्था की स्थाई निधि है–**निधि नाम गवाः** उसको रखना यानी धारण करना। धर्म जिसके पास गोधन हो, वह गोस्वामी और जो पालन करे, वह गोप और गोपाल। गायों के लिए बनाया या निकाला गया आहार गोग्रास। गोधूम किसे कहते हैं? गोजी जैसा क्वाथ, गोकर्ण जैसा तीर्थ, गोघाट जैसे सोपान के क्या कहने!

जहां गोधन रहता है, वह गोशाला, गोवास, गोलोक या गोठा या गोष्ठा। जहां एकाधिक कुलों का गोधन हो, वह गोकुल। जहां व्यांत गो बछड़ों के साथ रखी जाती हैं, वो गो खिड़क। गायों से गांव। गांव–गांव गोचर। जहां गायें साथ खड़ी की जा कर पूजन – नैवज हो, वह गोली या गवली। गोशाला और देवायतन का द्वार गोपुर, प्रतोली के पार्श्व अवलोकन गोख, गोखड़ा और गवाक्ष। जहां प्राकृतिक जल धारा फूटे, वह गोमुख। वह धारा होकर बहे तो गोमती नदी। छोटा स्थान गोपद, बड़ी बैठकी गोचर्म सम। सज्जा गोमूत्रिका और गाय वालों का महीना गोपमास मार्गशीर्ष।

गायों से ही हमारे गुवाड़, गोत्र और गायों से ही गली, गृह, उसमें भी गोमुखी, गावी जैसी रचनात्मक कक्ष्याएं। सब कुछ गोमातामय! जहां गाय है, वहां शुभ संभाव्य है।

हमारे पर्व, मास, त्यौहार यही सब याद दिलाने आते हैं। अलौकिक कहानियों से ज्यादा महत्व इन लौकिक शब्दों को समझने का है। गोपमास, गोपाष्टमी, गोवत्स द्वादशी, पोला आदि के मूल में यही भाव है। गोपाष्टमी के लिए कहा गया है कि उस अवसर पर गोग्रास और गौ

परिक्रमा होनी चाहिए। गायों के अनुगमन से अपेक्षित काम और कामनाएं पूरी होती हैं –

गोपाष्टमीति संप्रोक्ता कार्तिके धवले दले।।
तत्रकुर्याद्गवां पूजां गोग्रासं गोप्रदक्षिणाम्।।
गवानुगमनं दानं वांछन्सर्वाश्च संपदः।।

गोधूलि और सांझी चित्रांकन

क्वांर की गोधूलि बेला की महिमा पूरा मध्य भारत जानता है। मेरे लिए यह आलेख्य का आसोज है, कला का क्वांर। पितृ पक्ष एक अर्थ में चित्र पक्ष भी है, क्योंकि इस महीने में भित्तिचित्र बनाने की परिपाटी बहुत पुरानी है। उस काल की जबकि मानव ने बारिश में धुली पहाड़ी पत्थर वाली भित्तियों को उघाडी देखा और चींटी, कर्मला–कामला आदि रेंगने वाले जंतुओं से बचाव के लिए गोबर का प्रयोग करना सीखा। बाद में, गोबर के उभरांकन सुगम रूप से करने के लिए आधार पर हिरमिच से रेखांकन किया।

गृहिणियां, महिलाएं, खासकर लड़कियां इस काम में आगे आईं। गुहाओं में गोबर से सज्जा का यह काम संजा या संझ्या भी कहा जाने लगा। संझ्या को सांझ से जुड़ा कन्या पर्व कहा जाता है, यह क्वांर का पक्ष पर्व भी है। सांझी, संझ्या, संध्या, झिंजा, क्वांर चितराम, मामुलिया, भितां, रनु, रली जैसे कई नाम मगर एक ही पर्व। यह गोधूलि की महिमा का सुंदर रूपक है।

यह विश्वास भी पनप गया कि यह श्राद्धपक्ष में लोकदेवी संझ्या के स्मरण का सुअवसर है। लेकिन, इसमें पूर्ववर्ती पीढ़ियों के पात्रों, जो कि पूर्वज–पितर हैं, को उपकरणों, गतिविधियों समेत चित्रित करने का काम तो किया ही जाता है। गुहा चित्रों की पृष्ठभूमि इस प्रसंग में तुलनीय है। पानी पर रंग, आंगन में पत्तों से अंकन बहुत बाद में आया।

हमें पता है कि कन्याएं तिथि के अनुसार गाय के गोबर से नित नई आकृतियां बनाकर पत्तों, फूल–केसर, पंखुडियों से उसे सजाती हैं और फिर आरती करती हैं। 'आरती' यानी अपनी ही बनाई गई कला को कोई बुरी नजर न लग जाए, इसलिए निराकरण का उपाय। आरात्रिक या आरार्तिक.... आरती का मूल विचार इस पर्व के साथ जुड़ा है। गो गोबर, गोलमण्डल, गुलपोशी, गोधूलि बेला, गीतों से गुणगान और पूरे पन्द्रह दिन बाद विसर्जन। गुहा से गमन ।

वेद में ऊषादेवी और रात्रि देवी के पूजन का संदर्भ है, मगर संध्या देवी के पूजन का यह अनूठा पर्व है, जो प्रत्येक तिथि के साथ जुड़ी है और तिथि के वृद्धिसूचक अंकों के अनुसार अपना आकार तय करती जाती है... नारदपुराण में इन्हीं गुणों के कारण संध्यावली को श्रेष्ठ नायिका कहा गया है जो पति, पुत्र सहित महालय में लीन होती है, लेकिन इसका खास सन्दर्भ सांब पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण धारण किए हुए हैं –

आला फूलां भरियो वाटको जी कांई,
संझ्या की बाई ओ,
संझ्या ने भेजो करां संझ्या री आरती....।

भारतीय धरोहर 48 नवंबर दिसंबर 2024

दिल्ली प्रांत गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न

गत दिनांक 2 जनवरी 2025 को दिल्ली प्रांत गोरक्षा विभाग की बैठक दुर्गा मंदिर, दुर्गापुरी, शाहदरा, यमुना विहार, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री, विश्व हिंदू परिषद एवं राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख मा. दिनेश उपाध्याय जी, केंद्रीय मंत्री डॉ विवेक कुमार जी एवं प्रांत गोरक्षा प्रमुख जगबीर गौर जी तथा देसी गोवंश संरक्षण संवर्धन न्यास के प्रांत अध्यक्ष प्रमोद सिंघल जी, मंत्री नीरज अग्रवाल जी, कोषाध्यक्ष जितेंद्र कुमार मिश्रा जी, सह कोषाध्यक्ष मनोज कुमार झा जी एवं प्रांत गोरक्षा सह प्रमुख रणवीर जी और प्रांत के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में ट्रस्ट के गठन का कार्य एवं प्रांत की समितियों को पूर्ण करना तथा महाकुंभ में होने वाली राष्ट्रीय बैठक

और अधिवेशन जो 19 फरवरी 2025 और 20 फरवरी 2025 को प्रयागराज में आयोजित होंगे, जिसमें कार्यकर्ताओं से आने का आह्वान किया गया, साथ ही इससे संबंधित कार्यों पर विचार–विमर्श किया गया।

प्रस्तुति : गोरक्षा प्रमुख, जगवीर गौर (मोबाइल नंबर 9990346030)
कोषाध्यक्ष, जितेंद्र कुमार मिश्रा (मोबाइल नंबर 9810211700)

गोवंश संरक्षण के साथ गाय को राज्य माता घोषित करने की मांग

जालोर। राजस्थान गो सेवा समिति के पदाधिकारियों ने पंजीकृत गोशालाओं से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान को लेकर मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। इससे पूर्व अध्यक्ष बद्रीदान नरपुरा की मौजूदगी में मलकेश्वर मठ परिसर में बलदेव दास महाराज के सान्निध्य में बैठक आयोजित की गई, जिसमें अध्यक्ष ने सनातन धर्म और हिन्दू समाज में गाय की महिमा बताते हुए कहा गाय को मां का सम्मान दिया गया है, गाय के दूध से लेकर गोबर तक को शास्त्रों में व वैज्ञानिकों ने मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम माना है। उन्होंने गोमाता को राज्य माता घोषित करने की मांग की है। साथ ही कहा कि पंजीकृत गोशाला में संरक्षित गोवंश को वर्ष पर्यंत राज्य सरकार की ओर से सहायता राशि उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। गांवों में गोचर भूमि व अन्य चरागाह भूमि पर अतिक्रमण किए जा रहे हैं। इस तरह के मामलों में त्वरित कार्रवाई की मांग की गई। बैठक में मंगलसिंह सिराणा जी व दिनेश कुमार पुरोहित जी सचिव ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर सर्वश्री शिवनाथसिंह राजपुरोहित, केसरसिंह रेवतड़ा, नन्दकिशोर, छगनलाल मेंगलवा, जयरूपसिंह रेवतड़ा, मदन गुर्जर ने सहभागिता निभाई।

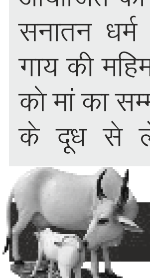

पुलिस की मुठभेड़ में तीन गोतस्कर धरे, दो के पैर में लगी गोली

गुरुग्राम के सेक्टर-65 के उल्लावास गांव से गोवंश चोरी कर कैंटर से भाग रहे थे बदमाश

फरुखनगर और सोहना क्राइम ब्रांच की टीम ने मेदावास गांव के पास पकड़ा

गुरुग्राम। सेक्टर– 65 थाना क्षेत्र के उल्लावास गांव से गोवंश चोरी कर कैंटर से भाग रहे तीन बदमाशों की गत 01 जनवरी के सुबह पांच बजे मेदावास गांव के पास पुलिस से भुठभेड़ हो गई। दोनों तरफ से दस राउंड फायरिंग हुई। मुठभेड़ के बाद तीन बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया गया। दो के पैर में गोली लगी है। इस गिरोह पर हत्या, हत्या के प्रयास, पुलिस टीम पर हमला करने, एटीएम मशीन चोरी समेत करीब 49 मामले दर्ज हैं। उन्होंने गुरुग्राम, नूंह समेत हरियाणा के अलग–अलग जिलों में वारदातें की हैं।

पुलिस प्रवक्ता संदीप कुमार ने बताया कि रात दो बजे पुलिस टीम को उल्लावास गांव से गोवंश चोरी होने की सूचना मिली। पता चला कि कुछ बदमाश एक कैंटर से गायें चोरी कर मेदावास की तरफ भाग रहे हैं। इस पर गश्त कर रही फरुखनगर और सोहना क्राइम ब्रांच की टीमों ने मेदावास गांव के पास कैंटर को रोकने की कोशिश की। कैंटर चालक ने गाड़ी को तेज करके भागने का प्रयास किया। पुलिस टीमों ने कैंटर का पीछा कर थोड़ी दूर पर ही घेर लिया। कैंटर चालक व कंडक्टर साइड से उतरने वाले दो लोगों ने पुलिस टीम पर गोली चलाई। एक गोली पुलिस की गाड़ी की खिड़की में लगी। पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की। इस पर एक–एक गोली दोनों आरोपितों के पैरों में लगी। दोनों जमीन पर गिर गए और पुलिस टीमों ने उन्हें पकड़ लिया। एक आरोपित कैंटर के केबिन से पकड़ा गया। आरोपितों की पहचान नूंह के रोजकामेव गांव के राशिद, पलवल के उटावड़ गांव के आरिफ व मंडल के रूप में की गई।

मुठभेड़ में गोली लगने के कारण घायल हुए आरिफ व राशिद को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज के बाद दोनों को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। तीनों के विरुद्ध सेक्टर 65 थाने में संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कराया गया है।

साभार : दैनिक जागरण

गाय की पूजा-अर्चना करने से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है : मिलिंद परांडे

बनमनखी (पूर्णियां) बिहार। विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित पूज्य संत भूदेव गोसाई महाराज गोसेवा ट्रस्ट के द्वारा गत गोपाष्टमी महापर्व विहिप परिसर गढ़ बनमनखी में मनाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिंदू परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर रविंद्र नारायण सिंह और विश्व हिंदू परिषद के संगठन महामंत्री मा. मिलिंद परांडे जी व बिहार सरकार के स्थानीय विधायक कृष्ण कुमार जी ऋषि उपस्थित थे। सर्वप्रथम गोमाता की विधि–विधान पूर्वक पंडित राधेश्याम शर्मा के द्वारा पूजा–अर्चना कराई गई। गोमाता को गुड़ व हरी घास खिलाकर आशीर्वाद लिया गया।

मंच पर दीप प्रज्वलित कर तीन बार ओम व 13 बार विजय महामंत्र का जाप किया गया। महामंत्री मिलिंद परांडे जी ने गोमाता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह गोशाला किसान को प्रशिक्षण देने के लिए तैयार की गई है। इसकी पूजा करने से हम सब सुख–समृद्धि प्राप्त करते हैं। डॉ आरएन सिंह ने कहा कि गाय के गोबर से विभिन्न तरह की बीमारियां दूर हो जाती हैं, इसलिए देसी गोवंश का हम सभी सनातन भाइयों को पालन–पोषण करना चाहिए। विधायक कृष्ण कुमार जी ऋषि ने कहा कि गोपालन से किसान समृद्ध होंगे। किसान के विकास के लिए बिहार सरकार हमेशा से कार्य करती रही है। गोपालन पर भी सरकार का विशेष ध्यान है। मंच पर उपस्थित संत मुरारी दास जी त्यागी, क्षेत्र संगठन मंत्री आनंद जी, काली चरण कंठ ने भी संबोधित किया। तीन गोभक्त दंपति कालूराम अग्रवाल, पप्पू भारतीय, रमेश बेध ने एक–एक गाय को गोद लिया। इस अवसर पर संगठन मंत्री नागेन्द्र जी, दक्षिण बिहार के प्रांत उपाध्यक्ष रामबालक प्रसाद जी, पूज्य संत भूदेव गोसाई महाराज, गोसेवा ट्रस्ट के मंत्री शिव शंकर तिवारी जी, विहिप जिला अध्यक्ष पवन कुमार पोद्दार जी, अशोक पोद्दार जी, कोषाध्यक्ष राम कुमार यादव, विहिप प्रखंड मंत्री सुधीर कुमार यादव, मनोज चौधरी, श्रीकांत तिवारी, वीर नारायण गुप्ता, रामचंद्र चौधरी, शशि शेखर कुमार, अभिषेक आदि उपस्थित थे।

Dr. Aastha Pathak

OUR MOTHER : COW

The cow has long been regarded as one of the most revered and vital animals in various cultures, especially in India, where it is often symbolized as "Kamadhenu," the divine wish-fulfilling cow. For centuries, cows have been an integral part of human existence, not only as a source of nourishment and livelihood but also as a symbol of fertility, abundance, and purity. To many, the cow is not merely an animal but a revered figure—"Cow, our mother." This concept goes beyond just religious and cultural sentiments and extends into the realms of ecology, sustainability, and ethical living. In this article, we will explore why cows are considered a mother figure, their significance in different cultures, and their role in the ecosystem and human life.

The Significance of Cows in Various Cultures

In many cultures, particularly in Hinduism, the cow is viewed with deep reverence. The term "Gau Mata" (meaning "Mother Cow") is used to acknowledge the cow's essential role in sustaining life. The cow's status as a sacred animal in Hinduism is largely due to its association with the goddess Kamadhenu, who symbolizes the fulfillment of all desires. Kamadhenu is often depicted as a wish-fulfilling cow, the provider of all necessities for human beings, embodying the qualities of selflessness, nurturing, and generosity.

In Hindu mythology, cows are also closely associated with the concept of Ahimsa (non-violence), which advocates for compassion toward all living beings. The cow, as a gentle and non-aggressive animal, is a representation of this philosophy. In ancient texts like the Rigveda, cows are referred to as symbols of wealth, purity, and prosperity. The milk from cows, essential to the well-being of many, is considered a divine gift, sustaining the physical

and spiritual nourishment of humans. The reverence for cows is not limited to India. Across the globe, cows have also been recognized as invaluable contributors to human civilization. In agrarian societies, cows are often seen as symbols of fertility due to their role in providing manure for the soil, which enhances agricultural productivity. In many indigenous cultures, the cow is seen as a protector and nurturer, and various rituals and celebrations are held to honor them.

A Cow's Role in Human Life

The significance of cows transcends cultural beliefs. Practically speaking, cows play a crucial role in the livelihoods of millions of people worldwide. The cow provides multiple resources, most notably milk, which is a major dietary component for billions of people. The nourishing quality of cow's milk is unparalleled. Rich in vitamins, minerals, and proteins, it provides an essential foundation for human growth and health. The presence of cows ensures that societies are not only nourished but also have access to other dairy products like cheese, yogurt, and butter, which are central to many cuisines worldwide.

Beyond milk, cows provide valuable products such as leather, which is used for clothing, shoes, and accessories. Cow dung, often considered waste by some, plays a significant role in rural communities. It is used as a natural fertilizer, contributing to healthy crops. In some cultures, cow dung is also used as a fuel source, which helps in cooking and heating, especially in remote areas. The hide of cows has historically been used for crafting tools and utensils, demonstrating the multifaceted contributions of the animal to human life.

Cows have also historically been used as draft animals. Their ability to pull carts, plows, and other agricultural machinery has made them indispensable in farming communities. The symbiotic relationship between humans and cows in agricultural societies has been fundamental to the development of civilizations. Cows have been partners in cultivating the land and ensuring a sustainable food supply.

Ecological and Environmental Benefits

Beyond their immediate practical uses, cows also contribute to the ecosystem in a way that underscores their nurturing qualities. In farming communities, cow manure acts as an organic fertilizer, enhancing soil fertility and promoting sustainable agriculture. Unlike synthetic fertilizers, which can degrade soil quality over time, cow dung helps maintain the health of the soil and can increase its water retention capacity. This reduces the need for chemical interventions, which can be harmful to the environment.

Cows also play a role in the biodiversity of

the areas they inhabit. In many regions, cows help maintain grasslands by grazing on plants that may otherwise overgrow and crowd out native species. This natural grazing behavior supports a healthy ecosystem by ensuring the balance between different species of plants and animals.

Moreover, in the context of modern sustainable practices, cows can be part of regenerative farming systems. Regenerative agriculture, which focuses on replenishing and enhancing the health of the land, can benefit from the natural grazing patterns of cows. When managed correctly, cattle grazing can restore soil carbon, enhance biodiversity, and contribute to the fight against climate change.

Ethical and Compassionate Considerations

In the modern era, the ethical treatment of cows has become a topic of considerable discussion. While cows have been revered and honored throughout history, the industrialization of agriculture has led to the exploitation of cows in many parts of the world. Factory farming practices have raised serious concerns about the humane treatment of cows, with many arguing that cows, like all sentient beings, deserve respect, compassion, and the right to live free from suffering.

The rise of plant-based and vegan diets has been, in part, a response to the ethical concerns surrounding the treatment of animals, including cows. Many people are now advocating for the welfare of cows, urging for more sustainable and compassionate practices in dairy farming. Ethical farming practices, such as free-range grazing and ensuring that cows live in conditions that allow them to roam freely and express their natural behaviors, are gaining attention as alternatives to industrial farming.

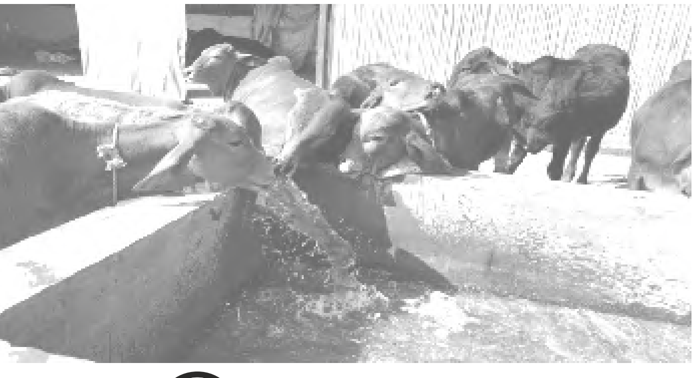

The Cow as a Symbol of Sustainability

The concept of the cow as our mother is not just limited to its reverence or utility—it is also rooted in the idea of sustainability. The relationship between humans and cows has been integral to sustainable farming practices for centuries. By adopting more humane and eco-friendly farming methods, the world can benefit from the cow's nurturing qualities while ensuring the protection of the environment and the well-being of future generations.

The rise of sustainable agriculture, which emphasizes the use of natural resources while minimizing harm to the environment, aligns closely with the traditional understanding of the cow's role as a provider and nurturer. Cows, when raised in a manner that respects their well-being and the planet, can be key players in a future where humans live in harmony with nature. This includes promoting practices such as grass-fed beef production, rotational grazing, and organic farming, all of which are more in line with the natural behaviors and ecological benefits of cows.

Conclusion : A Mother in Many Forms

The cow, revered as a mother figure in various cultures, represents more than just a source of food. It embodies qualities of selflessness, nurturing, and generosity that are vital to the survival and well-being of humans. The cow provides not only milk but also essential resources such as leather, manure, and labor, all of which contribute to human societies in immeasurable ways.

In the modern context, the cow also holds a special place in discussions about sustainability, ethical treatment of animals, and environmental stewardship. Whether as a symbol of spiritual wealth or a key player in sustainable agriculture, the cow's role is undeniable. As we move forward into a more environmentally conscious world, it is crucial to maintain a respectful and compassionate relationship with this extraordinary creature—our mother in the truest sense of the word.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

MEDICAL EMERGENCY MANAGEMENT IN MODERN GOSHALA

Goshalas, or cow shelters, are important institutions in India that serve as sanctuaries for cows, which are considered sacred animals in Hinduism. Over the years, modern Goshalas have evolved to not only provide shelter to cows but also promote their welfare and improve their health through comprehensive medical management practices. This essay will discuss the medical emergency management practices in modern Goshalas, highlighting their importance in ensuring the health and well-being of the cows.

Medical Management Practices in Modern Goshalas

Modern Goshalas employ a variety of medical management practices aimed at maintaining the health of cows. Regular health check-ups are a fundamental practice, where physical examinations, blood tests and other diagnostic tests are conducted to identify and treat health issues early. Vaccinations play a crucial role in preventing infectious diseases such as foot and mouth disease, brucellosis and anthrax. Deworming is another essential practice to eliminate internal parasites, which improves digestion and overall health.

Foot care is vital in preventing lameness and other foot-related problems. Regular trimming of the hooves ensures that the cows remain mobile and healthy. Nutrition management is also critical, with nutritionists formulating balanced diets based on the cows' age, weight and health status. Medical treatment for sick or injured cows is provided by veterinarians and animal health technicians, ensuring timely and appropriate care.

Emergency Medical Response Plan

A comprehensive emergency response plan is the cornerstone of effective emergency medical management in modern Goshalas. This plan

must address various types of emergencies, including natural disasters, accidents and medical crises. All staff members and volunteers should be familiar with the plan, which necessitates regular training sessions to ensure preparedness.

Emergency Medical Equipment and Supplies

Modern Goshalas need to be equipped with appropriate emergency medical equipment and supplies. This includes first aid kits, oxygen tanks, IV fluids and necessary medications. Regular checks and restocking of these supplies are crucial, as is training staff members on their proper use.

Identification and Triage

In the event of a medical emergency, quick identification and triage of cows are essential. Systems such as ear tags or microchips facilitate easy identification. Staff members must be trained to recognize signs of medical emergencies, such as difficulty breathing, lameness, or excessive bleeding. Rapid triage allows for prioritizing the cows based on the severity of their conditions, ensuring that the most critical cases receive immediate attention.

Emergency Transport

When a cow requires transportation to a veterinary hospital, an efficient emergency transport system is vital. This may involve a designated emergency vehicle or prearranged agreements with local veterinary hospitals. The transport vehicle must be equipped to handle medical emergencies and staffed with trained personnel to provide necessary care during transit.

Emergency Medical Treatment

Prompt and appropriate medical treatment is crucial during an emergency. This may include administering oxygen, IV fluids, medications or performing surgical interventions. Training staff in basic medical procedures such as wound care, bandaging and administering medications is essential to provide immediate care until a veterinarian can take over.

Communication and Reporting

Clear communication and reporting are critical during a medical emergency. All staff members should be kept informed about the situation and the cow's condition. Proper documentation of any medical treatment provided should be maintained in the cow's medical record, ensuring that all information is accessible to the staff.

Preventing Emergencies

While not all emergencies can be prevented, steps can be taken to reduce their likelihood. Regular maintenance and safety checks of the facility, proper fencing and enclosure design and routine health check-ups for the cows are necessary preventive measures. Training staff to recognize and respond to potential safety hazards further minimizes the risk of accidents and injuries.

In conclusion, modern Goshalas must implement comprehensive emergency medical management practices to effectively handle medical emergencies. These practices include having an emergency response plan, maintaining appropriate medical equipment and supplies, efficient identification and triage systems, emergency transport arrangements and ensuring clear communication and reporting procedures. Additionally, preventive measures should be in place to reduce the occurrence of emergencies. By adhering to these practices, modern Goshalas can ensure the well-being of cows, providing them with the best possible care during medical emergencies. These measures are critical to upholding the health and comfort of cows, which are revered and protected in Indian culture.

ODHAVRAM

DEVELOPERS

TULSIDAS V. JOSHI

+91 98250 27595

Builders and Land Developers, "Odhav Complex",
Opp. Town Hall, Bankers Colony, Bhuj-Kachchh.

Tel : (02832) 253008, Tel/Fax : (02832) 25309

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जनवरी, 2025

गोसम्पदा 'गोपाष्टमी विशेषांक' के लोकार्पण का विहंगम दृश्य

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक